पिताओं के लिए परमेश्वर का वचन

(6:4)

सन 1800 के दौरान बहुत से परिवार अपने घर छोड़कर अमेरिकी सीमा पर चले गए। अज़्सर ये परिवार मालगाड़ियों में इकट्ठे सफर करते थे। मालगाड़ी में स्काउट परिवार का प्रमुख व्यज़्ति होता था। हालात का जायजा लेने के लिए वह गाड़ी के पहुंचने से एक-दो दिन पहले पहुंच जाता था। वह भारतीयों का ध्यान रखता था। नदी पार करने के लिए वह कम पानी वाली जगह ढूंढ़ता था। मौसम के किसी खतरे के चिह्न को देखने के लिए वह आसमान को देखता था। मालगाड़ी के स्काउट का काम भावी खतरे की ओर ध्यान दिलाना, शत्रुओं पर नज़र रखना और गाड़ी के ठहरने के लिए सुरक्षित जगह चुनना होता था।[1]

एक अर्थ में, हर घर में पिताओं का काम मालगाड़ी के स्काउटों की तरह होता है। पिता के रूप में आप अपने परिवार को जीवन के सफर में ले जा रहे हैं, जिसमें आप अपनी पत्नी की अगुआई करते हुए बच्चों को उनके जीवन के लिए तैयार करने की कोशिश कर रहे होते हैं। आपका काम अपने पूरे परिवार अर्थात डैडी, मज़्मी और बच्चों को परमेश्वर की ओर ले जाना है।

अपने परिवार के मालगाड़ी के डिज़्बे में बैठने की कल्पना करें। बड़े खतरनाक इलाके से होकर आप गुज़र रहे हैं। शत्रु आपके इर्द-गिर्द, आक्रमण करने को तैयार हैं। मौसम खराब लगता है। हर मोड़ पर खतरे हैं। आपका परिवार उन्हें उनमें से निकालने के लिए आपकी ओर देख रहा है। वे आपको एक स्काउट के रूप में देखते हैं। वे आपके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हर खतरे से बचाने के लिए वे आपकी ओर देखते हैं।

6:4 में पौलुस ने घर में पिता की अगुआई के बारे में बताया: ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।'' इस पद की अनिवार्य सच्चाई यह है कि *परमेश्वर परिवार में पिताओं को ईश्वरीय अगुआई के लिए बुलाता है।*

आप किसी प्राइवेट कंपनी में या डाक सेवा में काम कर रहे हों या अपना बिज़नेस कर रहे हों। अपने परिवार के सिर पर छत रखे रहने और मेज़ पर खाना रखने के लिए आप कुछ न कुछ अवश्य करते हैं, *परन्तु आपका मुज़्य काम वह नहीं है!* जिस काम के लिए आपको हर महीने वेतन दिया जाता है,वास्तव में आपका वह मुज़्य कार्य नहीं है। *आपका मुज़्य कार्य*

आपका परिवार है! परमेश्वर ने आपको उनकी अगुआई करने की जिज़्मेदारी दी है। वह आपसे उन्हें किसी खतरनाक इलाके से निकालने की अपेक्षा करता है ताकि वे उस गन्तव्य तक जो उसने उनके लिए तैयार किया है, सुरक्षित पहुंच पाएं। इस कार्य को करने के लिए परमेश्वर का वचन हमें ज़्या समझ देता है? आयत 4 में पौलुस ने पिताओं के लिए नकारात्मक और सकारात्मक दोनों निर्देश दिए।

अपने बच्चों को रिस न दिलाओ

पौलुस ने कहा, ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ'' (6:4क)। ''रिस'' (यू.: *parorgizomai*) शज़्द का अर्थ ''क्रोध भड़काना, चिढ़ाना, गुस्सा दिलाना, कटुता बढ़ाना'' है। इसका सज़्बन्ध अपने बच्चों का क्रोध इतना बढ़ा देने से है कि वे क्रोध से खौलने लगें। ऐसा होने पर, वे हमारी बात पर ध्यान देना छोड़ देते हैं। वे हमारी अगुआई को नहीं मानते। समस्या वहीं आती है जब लोग परमेश्वर द्वारा उनके लिए चुने गए ढंगों को मानना बंद कर देते हैं।

ऐसे कौन से ढंग हैं, जिनसे हम अपनी सीमा को लांघकर बच्चों को इतना क्रोधित करते हैं कि वे चिढ़ जाएं?

1. *आवश्यकता से अधिक सुरक्षा।* बच्चों को घुटन लग सकती है। ऐसा तब होता है जब हम उन्हें स्वयं जोखिम लेने नहीं देते। हम उन्हें पट्टा डालकर रख सकते हैं कि उन्हें कभी छूट न दी जाए और उन्हें स्वतन्त्र रूप से जीवन जीना न आए।

2. *पक्षपात।* पक्षपात हम तब दिखाते हैं जब परिवार में हमें अपनी रुचि, चिंता या हिस्सेदारी का खतरा लगता है। यूसुफ, उसके पिता और उसके भाइयों की कहानी पढ़ें। पक्षपात के कारण उनके संघर्षों पर ध्यान दें।

3. *निराशा।* बच्चे के सामने पिता को ''तुम कुछ नहीं कर सकते'' या ''तुम कभी कोई सीधा काम कर ही नहीं सकते'' जैसी बातें नहीं कहनी चाहिए।

4. *दूसरों से मिलाना।* पिताओं को चाहिए कि हर बच्चे को दूसरे बच्चे से मिलाने की कोशिश न करें। हमें उन्हें अपनी सोच के अनुसार बदलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। बच्चों को अपने गुण दिखाने की छूट होनी चाहिए।

5. *ध्यान न देना।* रॉबर्ट कोलस को यह लिखने पर काफी विरोध सहना पड़ा था :

> मेरे विचार से अमेरिकी बच्चों को नैतिक उद्देश्य की बड़ी ही आवश्यकता है। उन्हें ऐसे माता-पिता मिले हैं जो उन्हें अच्छे कॉलेजों में दाखिल कराने, उनके लिए अच्छे-अच्छे कपड़े खरीदने, और रहने के लिए अच्छे लोगों में अवसर देने के बारे में चिन्तित होते हैं, जहां वे अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें और जहां उन्हें अच्छे से अच्छे खिलौने मिलें, छुट्टियों में घूमने जाएं और हर प्रकार की चीज़ पाएं। ... आज कल माता-पिता बड़ी मेहनत करते हैं: और वे वे चीज़ें ला रहे हैं जो उन्हें लगता है कि बच्चों के लिए ज़रूरी हैं। तो भी जो सबसे आवश्यक बात है वह नहीं हो रही। *वे अपने बच्चों को समय नहीं दे पा रहे,* या कम से कम कहें तो

अधिक समय नहीं देते।[2]

6. *क्रूरता।* पिताओं को क्रूर होने या अपना क्रोध या कड़वाहट या निराशा बच्चों पर उतारने का कोई अधिकार नहीं है। बहुत से प्रताड़ित करने वाले लोग कभी न कभी प्रताड़ित हुए होते हैं, परन्तु मसीही पिता को ऐसी प्रथा जारी नहीं रखनी चाहिए।

परमेश्वर पिताओं से ऐसा कार्य करने से बचने को कहता है जो निष्कपट न हो और जिससे हमारे बच्चों का क्रोध बढ़े। मेरे बच्चे कई बार मुझ से कहते हैं, ''आप यह ठीक नहीं कर रहे।'' कई बार वे सही होते हैं; मैं ठीक नहीं कर रहा होता। परमेश्वर मुझ से ही नहीं हर पिता से इससे अधिक की अपेक्षा करता है।

अपने बच्चों की अगुआई करना

एक पल के लिए तीन टांगों वाले एक स्टूल पर विचार करें। इसे खड़ा रहने के लिए तीन टांगें होनी आवश्यक हैं। यदि एक टांग निकाल दी जाए, तो यह स्टूल खड़ा नहीं हो पाएगा। अपने बच्चों की अगुआई करने के बारे में पौलुस ने तीन तत्वों का उल्लेख किया है। सफल होने के लिए पिता की अगुआई के लिए ये तीनों आवश्यक हैं।

1. *कोमलता।* यह विचार ''उनका पालन पोषण करो'' (यू.: *ektrepho*) वाक्यांश में मिलता है। मूलत: इसका अर्थ ''परिपक्व होने तक बढ़ाना, पालन-पोषण करना, शिक्षा देना, या कोमलता से प्रबन्ध करना'' है। परमेश्वर का भय रखने वाले पिता कोमल होते हैं। ऐलन लॉय मेकगिनिस ने कहा था, ''बढ़िया वार्निश की तरह सम्बन्धों पर दयालुता की परतें लगाई जाती हैं।''[3]

पिताओ, अपने बच्चों की अगुआई करने के लिए, तुम्हें कोमलता और दयालुता में बड़े होना पड़ेगा। हम कोमलता कैसे बढ़ा सकते हैं।

(1) अपने बच्चों की ओर ध्यान दो और उनकी ज़ावनाओं का सम्मान करो।

(2) जब आपकी गलती हो या आपने आवश्यकता से अधिक कठोरता की हो तो उससे क्षमा मांगने का जिगर रखो।

(3) स्पृश्य बनें-गले लगाकर उदार बनें।

(4) बच्चों को दृढ़ता दें; उन्हें उनके प्रयासों में प्रोत्साहित करें।

(5) हर बच्चे के साथ व्यवहार के लिए अपनी पत्नी की सलाह पर ध्यान दें।[4]

परमेश्वर हमें संवेदनशील अगुवे बनने के लिए कहता है जो कायरता नहीं है। बच्चों के साथ संवेदनशील होकर पुरुष वही बनते हैं जो परमेश्वर उनसे चाहता है।

2. *अनुशासक।* पिताओं को चाहिए कि बच्चों का पालन-पोषण प्रभु की ''शिक्षा'' (यू.: *paideia*) या ''अनुशासन'' में करें। इसका अर्थ समय-समय पर ''नियम तथा व्यवस्था, पुरस्कार, और आवश्यकता पड़ने पर दण्ड देकर शिक्षा देना'' है।[5] लूका ने इस शब्द का इस्तेमाल यीशु को कही पिलातुस की बात लिखने के लिए किया: ''इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं'' (लूका 23:16)। लिखा है, ''और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के

हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है'' (इब्रानियों 12:10)।

जेज़्स डॉबसन ने अनुशासन को इच्छा को रूप देना कहा। इसके लिए उसके सुझावों में निज़्न बातें शामिल हैं:[6]

(1) *पहले से ही समझा दें कि सीमाएं ज़्या हैं।* ज़िज़्मेदार ठहराए जाने से पहले ही बच्चे को पता हो कि उसकी सीमा ज़्या है।

(2) *आगे से चुनौती मिलने पर, आत्मविश्वासपूर्ण निर्णय से जवाब दें।* इच्छाओं के संघर्ष में माता-पिता को निर्णायक आत्मविश्वासपूर्ण ढंग से जीतना चाहिए।

(3) *जान बूझकर आगे बोलने और बचपन की गैर ज़िज़्मेदारी में फर्क करें।* किसी बच्चे को किसी ऐसी बात के लिए तमाचा नहीं मारा जाना चाहिए जो अनजाने में की गई गलती हो। उसे निकज़्मी चीज़ को निकालना भूलने के लिए तमाचा नहीं मारना चाहिए। जान बूझकर अवज्ञा करना और बात है। इससे सीधे पेश आना चाहिए।

(4) *सामना होने के बाद फिर से विश्वास दिलाएं और समझाएं।*

(5) *असज़्भव मांगों को नज़रअंदाज कर दें।* बच्चे को कभी ऐसी बात के लिए दण्ड न दें जिसे वे उस समय करने में सक्षम न हों।

(6) *प्रेम से ही अगुआई करें।*

पिताओं के लिए तीन टांगों वाले स्टूल की दो टांगें कोमलता तथा अनुशासन है। यह हमें तीसरी और आवश्यक टांग तक पहुंचाता है।

3. *चेतावनी।* ''चेतावनी'' (यू.: *nouthesia*) शज़्द का मूल अर्थ ''चित के सामने रखना'' है। इसका अर्थ मौखिक निर्देश या मौखिक चेतावनी के लिए है। महायाजक एली अपने पुत्रों के लिए यह करने में नाकाम रहा था। ध्यान दें कि ज़्या हुआ था:

> यहोवा ने शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक ऐसा काम करने पर हूं, जिससे सब सुनने वालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा। उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूंगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरज़्भ से अन्त तक पूरा करूंगा। ज़्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूं, कि मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिए उसके घर का न्याय करूंगा, ज़्योंकि उसके पुत्र आप शापित हुए हैं, और उसने उन्हें नहीं रोका (1 शमूएल 3:11-13)।

सप्तति अनुवाद में आयत 13 ''रोका'' शज़्द का अनुवाद 6:4 के ''चेतावनी'' के लिए उसी मूल शज़्द के साथ हुआ है। एली ने जीवन भर परमेश्वर की सेवा की थी। उसने आराधना में इस्राएल की अगुआई की थी, परन्तु जब अपने बेटों की बात आई तो उसने उन्हें रोका नहीं। कई बार पिताओं को अपने बच्चों के साथ खुरदरे होना पड़ता है। बच्चों के सही पालन-पोषण के लिए स्पष्ट निर्देश देना आवश्यक है।

सारांश

परमेश्वर जीवन के खतरों, संघर्षों तथा चुनौतियों में से परिवार को ले जाने की हर पिता को ज़िम्मेदारी देता है। उनकी अगुआई इस तरीके से करें कि उससे बच्चों को क्रोध न आए। सकारात्मक तीन बातों, कोमलता, शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनकी अगुआई करें।

टिप्पणियां

[1]स्टु वेबर, *टैंडर वारियर: गॉड 'स इंटेंशन फॉर ए मैन* (सिस्टर्स, ओरिग.: मल्टनोमा बुक्स, 1993), 21-26. [2]स्टीव फरर, *प्वाइंट मैन: हाऊ ए मैन कैन लीड ए फैमिली* (पोर्ट लैंड, ओरिग.: मल्टनोमा प्रैस, 1990), 209 में उद्धृत रॉबर्ट कोलस, ''रिफलैक्शंस,'' *क्रिश्चियनिटी टुडे* (16 जून 1989), 45. [3]ऐलन लॉय मैकगिनिस, फरर, 211-12 में उद्धृत। [4]वहीं, 213-16. [5]वहीं 215-16. [6]अनुशासन के क्षेत्र की खोज के लिए जेक्स डॉबसन, *डेयर टू डिसिप्लिन* (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1970), 15-62 एक उत्तम स्त्रोत है।